भाकृअनुप-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

कपास की खेती के लिए XII (बारहवीं) साप्ताहिक परामर्श, 8 से 14 अगस्त, 2023 तक

	वास्तविक वर्षा (मिमी)					अनुमानित वर्षा (मिमी)					परामर्श
	अगस्त					अगस्त					
दिनाँक	04	05	06	07	08	10	11	12	13	14	
हरियाणा											
हिसार	0	0	0	0	0	3	5	4	0	0	हिसार में, 77 से 120 दिनों के पश्चात फसल फूल आने से लेकर गूलर विकास की अवस्था में होती है। निराई-गुड़ाई और कीटनाशकों का छिड़काव किया गया। बारिश के बाद कुछ खेतों में मोथा, संथी, मकरा, हिरनहुरी, केलपत्ता और दूब जैसे खरपतवार देखे गए। संभवता अनुसार हाथ से निराई-गुड़ाई की गई। बारिश के बाद थ्रिप्स की संख्या में गिरावट आई, अधिकांश क्षेत्रों में यह ईटीएल से नीचे है। कई क्षेत्रों में जैसिड और सफेद मक्खी की आबादी ईटीएल से ऊपर बढ़ रही है। कई कपास के खेतों में फूलों और हरे रंग के गूलर में गुलाबी सूँडी का संक्रमण ईटीएल से ऊपर देखा गया। हिसार और जिंद जिलों के लगभग सभी खेतों में कपास की पत्ती मोड़ने वाली वायरल बीमारी, बॉल रॉट और मायरोथेसियम/फंगल लीफ स्पॉट दर्ज किए गए। सिरसा में, फसल 85 से 105 दिन की है, जो कि स्कवेर होने, फूल आने और गूलर बनने की अवस्था में है। कुल मिलाकर फसल अच्छी स्थिति में है। ट्रैक्टर और हाथ से गुड़ाई, निराई और सिंचाई, उर्वरक अनुप्रयोग और आवश्यकता आधारित पोषक तत्वों और कीटनाशक के छिड़काव द्वारा अंतर-कृषि संचालन प्रगति पर है। अधिकांश स्थानों पर सफ़ेद मक्खी और जैसिड की आबादी ईटीएल को पार कर गई है, जबकि थ्रिप्स की आबादी में भारी कमी आई है। रोसेट फूल से होने वाले नुकसान में कमी आई है लेकिन हरे रंग के गूलर से होने वाला नुकसान ईटीएल से अधिक बढ़ गया है। हरे गूलर की क्षति के आधार पर कुछ स्थानों पर गुलाबी सूँडी की घटना ईटीएल को पार कर गई है। कपास के खेतों में जड़ सड़न और बोल
जींद	0	0	0	0	0	8	5	6	0	0	
सिरसा	0	0	0	0	0	3	4	5	0	0	
रोहतक	0	0	0	0	0	8	5	5	0	0	

											सड़न की घटनाएं देखी गईं। परामर्श: हिसार में किसानों को कपास के खेतों में भारी बारिश के बाद जमा पानी को बाहर निकालने की सलाह दी जाती है। फसल में संभवता के अनुसार सिंचाई/वर्षा के बाद खरपतवार प्रबंधन करें। 10 से 12 सप्ताह पुरानी फसल में यूरिया की दूसरी विभाजित खुराक 1 बैग (45 किग्रा)/एकड़ की दर से डालें। अधिक उपज प्राप्त करने के लिए फूल आने और गूलर बनने की अवस्था के दौरान 1% की दर से 13:00:45 का पर्णीय छिड़काव करें। जिंक की कमी को दूर करने के लिए हल्की मिट्टी में उगाई जाने वाली फसल पर यूरिया 2.5% और जिंक सल्फेट 21% @ 0.5% का छिड़काव करें। कपास की फसल में जहां फूल आना और बीजकोष बनना शुरू हो गया है, फूलों और बीजकोषों में गुलाबी सूंडियों के हमले के प्रति सतर्क रहें और निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन जाल लगाएं। अगस्त के मध्य तक लगातार 3 दिनों तक 6-8 वयस्कों/ट्रेप में आने से इसके प्रबंधन के लिए कीटनाशक की आवश्यकता होती है। यदि गुलाबी सुंडी का संक्रमण 5-10% रोसेट फूलों या 5-10% संक्रमित हरी गूलर के ईटीएल को पार कर जाता है, तो 10 दिन बाद आवश्यक होने पर प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिली/एकड़ या क्विनालफॉस 20 एएफ @ 400 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। फ्लोनिकैमिड @ 80 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करके जैसिड और सफेद मक्खी की घटनाओं को नियंत्रित करें। सफेद मक्खी के गंभीर संक्रमण की स्थिति में, पाइरिप्रोक्सीफेन 10 ईसी @ 500 मिली या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एससी @ 200 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। मायरोथेशियम लीफ स्पॉट, कोरिनेस्पोरा, अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट और आर्द्र मौसम के झुलसा जैसे पर्ण रोगों के मामले में, कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डब्लूपी @0.3% या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डब्लूपी @ 4 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10

											मिली या मेटिरम 55% + पायराक्लोस्ट्रोबिन 5% डब्लूजी @20 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का पर्णीय छिड़काव करें। कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डब्लूपी @30 ग्राम या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डब्लूपी @ 4 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफ़ेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिराम 55%+पाइराक्लोस्ट्रोबिन 5% डब्लूजी @20 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का उपयोग करके बोल सड़न का प्रबंधन करें। कम से कम साप्ताहिक अंतराल पर और बारिश के बाद नियमित रूप से खेतों की निगरानी करें। सिरसा में, किसानों से अनुरोध है कि वे अंतर-कृषि संचालन कार्य जारी रखें। कीट-पतंगों की घटनाओं की नियमित निगरानी करें। अब से, सलाह के अनुसार गुलाबी सूँडी की निगरानी ट्रैप कैच या 20 हरे गूलर/एकड़ नमूने के माध्यम से करें। जहां भी फसल 70 से 80 दिन में फलने की अवस्था की हो और पहला खुराक पहले ही दिया जा चुका हो, वहां नाइट्रोजन (यूरिया 40 किग्रा/हेक्टेयर) का दूसरा भाग डालें। एन:पी:के (13:0:45) @ 2.0 किग्रा/150 लीटर पानी का पत्तियों पर प्रयोग शुरू करें और 10 दिनों के अंतराल पर 2-3 बार दोहराएं। बीटी कपास में अधिक उपज और पत्तियों के लाल होने के प्रबंधन के लिए पुष्प अवस्था और गूलर विकास के चरणों के दौरान 15 दिनों के अंतराल पर 1 किलोग्राम मैग्नीशियम सल्फेट को 100 लीटर पानी में प्रति एकड़ में दो छिड़काव करें। घास और चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 6% + क्विज़ालोफॉप एथिल 4% @ 1250 मिली/हेक्टेयर का छिड़काव करें ग्लूफ़ोसिनेट अमोनियम का 2250 मिली/हेक्टेयर की दर से या फसल पंक्तियों के बीच खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए निर्देशित रूप में (सुरक्षात्मक हुड का उपयोग करके) छिड़काव करें । स्प्रे के लिए प्रति एकड़ 200 लीटर पानी का प्रयोग करें। सफेद मक्खी की वयस्क आबादी को 150 लीटर पानी में डायफेंथियुरोन 50% डब्लूपी @ 200 ग्राम या एफिडोपाइरोपेन 50डीसी @ 400 मिलीलीटर या डिनोटफ्यूरान

											20एसजी @ 60 ग्राम या फ्लोनिकैमिड 50 डब्लूजी @ 80 ग्राम/एकड़ का उपयोग करके प्रबंधित करें। यदि निम्फल आबादी में ईटीएल अधिक है, तो पाइरिप्रोक्सीफेन 10 ईसी @ 500 मिलीलीटर या बुप्रोफेज़िन 25 एससी @ 400 मिलीलीटर या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एससी @ 200 मिलीलीटर/एकड़ को 150 लीटर पानी/एकड़ में डालें। यदि कोई थ्रिप्स की घटना हो तो उसे नियंत्रित करने के लिए स्पिनेटोरम 11.7 एससी @170 मिली या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @100 ग्राम/एकड़ या प्रोफेनोफॉस 50 डब्ल्यूपी @600 मिली/एकड़ को 150 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें जो गुलाबी सूँडी के प्रबंधन में भी मदद करते हैं। जैसिड को नियंत्रित करने के लिए डिनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 60 ग्राम या फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम प्रति एकड़ का छिड़काव करें, यह सफेद मक्खी के खिलाफ भी प्रभावी है। यदि गुलाबी सूँडी ईटीएल को पार कर जाता है, तो रोसेट फूल क्षति/ट्रैप कैच/हरी बॉल क्षति के आधार पर, इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या स्पिनेटोरम 11.7 एससी @ 170 मिलीलीटर/एकड़ या प्रोफेनोफॉस 50WP @ 600 मिलीलीटर/एकड़ या क्लोरपाइरीफोस 20% ईसी @ 500 मिली या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी 200 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। एक ही कीटनाशक को दोबारा न दोहराएं और आवश्यकता पड़ने पर कीटनाशक को बारी-बारी से प्रयोग करें। जड़ सड़न से प्रभावित पौधों और आसपास के स्वस्थ पौधों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 12 ग्राम/10 लीटर पानी या ट्राइकोडर्मा हार्ज़ियानम या टी. विरिडी डब्ल्यूपी फॉर्मूलेशन @ 5-6 ग्राम/लीटर पानी से भिगोएँ। गूलर सड़न को नियंत्रित करने के लिए कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डब्लूपी @30 ग्राम या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डब्लूपी @ 4 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिराम 55%+पाइराक्लोस्ट्रोबिन 5% डब्लूजी @20 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का छिड़काव करें। प्रभावित पौधों पर मुरझाने के लक्षण दिखाई देने के तुरंत बाद, पैराविल्ट से प्रभावित पौधों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्लूपी @0.4 ग्राम या

											कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्लूपी / डब्लूजी @2.5 ग्राम + 20 ग्राम यूरिया/लीटर पानी या कोबाल्ट क्लोराइड @10 मिलीग्राम/लीटर का छिड़काव करें। कार्बेन्डाजिम 12%+ मैनकोजेब 63% डब्लूपी @3 ग्राम/लीटर या क्रेसॉक्सिम-मिथाइल 44.3% एससी @1 मिली/लीटर या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @1 मिली/लीटर या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% एससी @ 1 मिली/लीटर या पायराक्लोस्ट्रोबिन 20% डब्ल्यूजी @1 मिली/लीटर या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 0.6 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करके पत्तों पर फंगल धब्बों का प्रबंधन करें। ।
राजस्थान											
अजमेर	0	65	0	0	0	0	0	1	2	1	दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में, फसल 42 से 88 दिनों के पश्चात, वानस्पतिक अवस्था से फूल आने की अवस्था में होती है। लगातार बारिश के कारण अंतर-कृषि संचालन नहीं हो सके। खेतों में घास और चौड़ी पत्ती वाले दोनों तरह के खरपतवार फैल गए हैं। जैसिड को छोड़कर कीट और बीमारियों का कोई प्रकोप नहीं, लेकिन वह भी ईटीएल से नीचे। श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, फसल 70 से 125 दिन की है, एवं फसल वानस्पतिक, शाखाबद्ध, स्कवेर गठन और फूल लगने की अवस्था में है। इटसिट (ट्रायनथेमा एसपीपी), टांडला (डिगेरा अर्वेन्सिस), मोथा (साइपरस रोटंडस) जैसे खरपतवारों ने फसल को प्रभावित किया है। बुआई के बाद सिंचाई की गई है, जल्दी और समय पर बोई गई कपास में अंतर-कृषि क्रियाएं अपनाई गई हैं। खरपतवार हटाने के लिए हाथ से निराई और गुड़ाई की गई है। कपास के खेतों में रस चूसने वाले कीटों की घटनाएं ईटीएल से नीचे है और सीएलसीयूडी के लक्षण दिखाई देने लगी हैं। **परामर्श**:
जोधपुर	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	
नागौर	0	0	0	0	0	1	0	1	1	0	
पाली	0	0	0	0	0	2	0	1	1	1	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	2	1	0	

											दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे फसल के चरण के अनुसार एन उर्वरकों की अनुशंसित खुराक का पहला या दूसरा भाग डालें। रस चूसने वाले कीटों के संक्रमण की निगरानी करें और यदि यह ईटीएल से अधिक हो जाए तो उन्हें नियंत्रित करने के लिए 5% नीम बीज गिरी अर्क (एनएसकेई) या अजाडिरेक्टिन 1500 पीपीएम (0.15% ईसी) @ 5 मिली/लीटर पानी या बुप्रोफेज़िन 25 एससी @ 1.25 लीटर/हेक्टेयर या डायफैंथियूरॉन 50 डब्ल्यूपी @ 625 ग्राम/हेक्टेयर या एसिटामिप्रिड 20 ईसी @100 मिली/हेक्टेयर या फ़्लोनिकैमिड 50 डब्लूजी @200 ग्राम/हेक्टेयर का छिड़काव करें। सफेद मक्खी और जैसिड की निगरानी के लिए 8 प्रति एकड़ की दर से पीले चिपचिपे जाल लगाएं और गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2 प्रति एकड़ की दर से फेरोमोन जाल लगाएं। गीली मिट्टी की स्थिति में, जहां हाथ से निराई-गुड़ाई करना संभव नहीं है, यदि खेत घास वाले खरपतवारों से संक्रमित है, तो बुआई के 25-30 दिन बाद क्विज़ालोफॉप इथाइल 5% ईसी @ 2 मिली/लीटर पानी में शाकनाशी का प्रयोग करें, घास वर्गीय खरपतवारों के लिए और पाइरिथियोबैक सोडियम 10% ईसी @ 1.25 मिली/लीटर पानी चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार या पाइरिथियोबैक सोडियम 6% ईसी + क्विज़ालोफॉप एथिल 4% ईसी @ 2-2.5 मिली/लीटर पानी में घास और चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार दोनों को नियंत्रित करने के लिए उपयोग करें । एक ही कीटनाशक और एक ही समूह के कीटनाशकों को दोबारा न दोहराएं। दो या अधिक कीटनाशकों के टैंक मिश्रण से बचें। श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, किसानों को अधिकतम उर्वरक उपयोग दक्षता के लिए पहली और दूसरी सिंचाई के बाद नाइट्रोजन उर्वरकों की अनुशंसित खुराक लगाने की सलाह दी जाती है। सिंचाई से ठीक पहले नत्र के प्रयोग से बचें क्योंकि इससे उर्वरकों का रिसाव होता है और परिणामस्वरूप, भूजल प्रदूषित होता है। यूरिया की दूसरी और तीसरी खुराक 27.5 किग्रा/खुराक विभाजित करें, दूसरी खुराक पहली सिंचाई के समय, तीसरी खुराक स्कवेर गठन पर/दूसरी सिंचाई मिट्टी के प्रकार और नमी की स्थिति के आधार पर दें। जहां फसल 65 दिन से ऊपर है, वहां

											पोटेसीयम नाइट्रेट @ 2% का पत्ते पर प्रयोग करें। कपास के खेतों के आस-पास से खरपतवार हटा दें। कीटों और बीमारियों के लिए फसल की नियमित निगरानी करें। फसल की प्रारंभिक अवस्था में या रस चूसने वाले कीटों और गुलाबी सुंडी के कम संक्रमण की स्थिति में नीम आधारित कीटनाशकों का 5 मिली/लीटर की दर से छिड़काव करें। जैसिड को नियंत्रित करने के लिए डिनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 60 ग्राम या फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम प्रति एकड़ का छिड़काव करें, यह सफेद मक्खी के खिलाफ भी प्रभावी है। थ्रिप्स संक्रमण के मामले में, स्पिनेटोरम 11.7 एससी @ 0.8 मिली/लीटर या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 3 मिली/लीटर पानी का उपयोग करें। गूलर सूँडी की निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन ट्रैप लगाएं। नियमित रूप से गूलर सूँडी की उपस्थिति की निगरानी करें और प्रभावित फूल को सूँडी सहित नष्ट कर दें। जहां भी गुलाबी सूँडी की संख्या ईटीएल को पार कर जाती है, यानी फूल या गूलर का संक्रमण 5% से अधिक है, प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 30 मिलीलीटर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 5 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का छिड़काव करें।
मध्य प्रदेश											
खरगाँव											खंडवा में, 42 से 91 दिनों के पश्चात, फसल वानस्पतिक, फूल आने से पहले, फूल आने और गूलर बनने की अवस्था में होती है। फसल की अवस्थाओं के अनुसार निराई-गुड़ाई, अंतरकृषि संचालन, उर्वरक और कीटनाशकों का प्रयोग किया गया है। फिलैन्थस निरूरी, कैमेलिना सेसिलिस, डिगेरा अर्वेन्सिस, साइनाडॉन डैक्टिलॉन, साइपरस रोटंडस, डिजिटेरिया सेंगुइनलिस, इचिनोक्लोआ और यूफोरबिया जैसे खरपतवार ने खेतों को संक्रमित कर दिया है। कुछ क्षेत्रों में जैसिड्स और बैक्टीरियल ब्लाइट की घटनाएं देखी गई हैं। **परामर्श:** किसानों को सलाह दी जाती है कि वे रासायनिक उर्वरक की दूसरी खुराक क्रमशः 150:75:40 किग्रा/हेक्टेयर की दर से डालें, जिसमें 25% नत्र और 50% फास्फोरस और पोटाश 60 दिनों पर और 25% नत्र 90 दिनों पर डालें। इन पोषक तत्वों की
धार	0.5	4.8	0.5	0.2	0	45	15	16	3	2	
खांडवा											

											विभाजित खुराकें कॉलम विधि द्वारा 10 से 15 सेमी की गहराई पर डालनी चाहिए। यदि खेत की स्थिति संभावित हो तो उन क्षेत्रों में जहां फसल 35 दिन पर है, वहां बैल से चलने वाले कोल्पा से निराई करें। गीली मिट्टी की स्थिति में, जहां हाथ से निराई-गुड़ाई करना संभव नहीं है, यदि खेत घास वाले खरपतवारों से संक्रमित है, तो बुआई के 25-30 दिन बाद क्विज़ालोफॉप इथाइल 5% ईसी @ 2 मिली/लीटर पानी में शाकनाशी का प्रयोग करें, घास वर्गीय खरपतवारों के लिए और पाइरिथियोबैक सोडियम 10% ईसी @ 1.25 मिली/लीटर पानी चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार या पाइरिथियोबैक सोडियम 6% ईसी + क्विज़ालोफॉप एथिल 4% ईसी @ 2-2.5 मिली/लीटर पानी में घास और चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार दोनों को नियंत्रित करने के लिए उपयोग करें। रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम और गुलाबी सूँडी द्वारा अंडे देने से रोकने के लिए फसल की 45-60 दिन पर नीम आधारित कीटनाशकों का 1 लीटर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। गुलाबी सूँडी कीट गतिविधि की निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन ट्रेप स्थापित करें। रोसेट फूलों की उपस्थिति का निरीक्षण करें और उन्हें इकट्ठा करके तुरंत नष्ट कर दें।

फसलकाल के बाद और बुआई से पहले की प्रथाओं का विवरण

1. पिछले फसल मौसम के बचे हुए डंठलों और आंशिक रूप से खुले हुए गूलरों को खेतों से हटा दे। उखाड़े गए कपास के डंठलों को खेत की मेड़ों पर न रखें। फसल के मौसम के अंत में, पिछली पीढ़ी के गुलाबी सूँडी फसल के अवशेषों जैसे कि संक्रमित गूलर, डंठल या मिट्टी में सुसुप्तावस्था में चले जाते हैं। इसलिए, गुलाबी सूँडी के जीवन चक्र को तोड़ने के लिए ऐसे संक्रमित अवशेषों को तुरंत नष्ट कर देना चाहिए। अवशेषों के नष्ट होने से जीवाणु पत्ती झुलसा, जड़ सड़न और फंगल पत्ती धब्बे जैसी बीमारियों से नए मौसम की कपास की फसल में संक्रमण को कम करने में भी मदद मिलेगी।
2. फसलकाल के बाद यदि कोई कीट या आत्मघाती पतंगे रह गए हो तो उनको फंसाने के लिए मार्केट यार्ड और जिनिंग मिलों के परिसर में 20 मीटर की दूरी पर कम से कम 10 फेरोमोन जाल स्थापित करें। फेरोमोन ट्रेप में ल्यूर समय पर बदलें। क्षतिग्रस्त बीजों से निकलने वाले लार्वा को भी नष्ट कर दे। इससे जिनिंग या मार्केट यार्ड परिसर से आस-पास के खेतों तक गुलाबी बॉलवर्म के संक्रमण को फैलने से रोकने में मदद मिलेगी।
3. कपास की फसल की मानसून के पूर्व बुआई से बचें। जल्दी बोई गई फसल में स्कवेर और फूल जैसी प्रजनन संरचनाएं जल्दी आ जाती हैं। पिछले सीज़न की निष्क्रिय/सुस्प्त आबादी से निकलने वाले गुलाबी सूँडी इन स्कवेर और फूलों पर अंडे देते हैं, इस प्रकार जल्दी बोई

गई फसल नए फसलकाल में गुलाबी सूँडी की पहली पीढ़ी को पूरा करने में मदद करती है। यदि समय पर नियंत्रित नहीं किया गया, तो इस आबादी की अगली पीढ़ियां समय पर बोई गई कपास की फसल पर लगे हुए स्कवेर, फूल और गूलर की शुरुआत के साथ ही फैलने लगती हैं।

4. गर्मियों के दिनों में गहरी जुताई करने से, अप्रैल-मई में सूरज की चिलचिलाती गर्मी के कारण मिट्टी में छिपे सुप्त लार्वा और प्यूपा को बाहर निकल जाते है और गर्मी से मर जाते है। इसके अलावा, जुते हुए खेतों का अनुसरण करने वाले पक्षी कीड़ों के इन जीवन चरणों का शिकार करते हैं। इससे आने वाले मौसम में कपास की फसल पर गुलाबी सूँडी, पत्ती खाने वाले सूँडी, मिट्टी जनित बीमारियों जैसे विल्ट, जड़ सड़न और नेमाटोड को कम करने में मदद मिलती है।
5. गुलाबी सूँडी के जीवन चक्र को तोड़ने के लिए पिछले फसलकाल के दौरान जिन खेतों में गुलाबी सूँडी का अत्यधिक प्रकोप था, वहां फसल चक्र अपनाना चाहिए। कपास गुलाबी सूँडी का एकमात्र भोजन है, इसलिए फसल चक्र इस कीट के जीवन चक्र को तोड़ने में मदद करता है। रोगग्रस्त खेतों में मृदा जनित रोगों और सूत्रकृमि के संक्रमण को रोकने में फसल चक्र बहुत प्रभावी है।
6. कपास की रस चूसने वाली कीट और रोग प्रतिरोधी, कम अवधि वाली और जल्दी पकने वाली किस्में/संकर उगाएं। इससे फसल के शुरुआती विकास चरण के दौरान रस चूसने वाले कीटों और बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए कीटनाशकों के अवांछित छिड़काव से बचने में मदद मिलती है। गुलाबी सूँडी का संक्रमण फसलकाल के मध्य से शुरू होता है और फसलकाल के अंत तक लगातार बढ़ता है। इसलिए, कम अवधि और जल्दी पकने वाली किस्में देर के मौसम में गुलाबी सूँडी के संक्रमण से बचने में मदद करती हैं।
7. कपास की फसल की बुआई जून माह में 80-100 मिमी मानसूनी वर्षा होने पर ही करनी चाहिए। उचित अंकुरण और अच्छी फसल को सुनिश्चित करने के लिए, शुरुआती अंकुर चरण के दौरान लंबे समय तक शुष्क अवधि का सामना करने के लिए, मिट्टी में इष्टतम नमी होनी चाहिए। इससे वर्षा के लंबे समय तक न होने एवं मौसम शुष्क रहने के कारण दोबारा बुआई से बचने में भी मदद मिलती है। जून में समय पर बुआई करने से गुलाबी सुंडी के शुरुआती संक्रमण से बचने में मदद मिलती है।
8. गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) रणनीति के कार्यान्वयन के संबंध में कपास किसानों के बीच जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए। दुकानदारों को यह भी सलाह दी जा सकती है कि वे किसानों को मानसून के पूर्व बुआई न करने के लिए सूचित करें। इससे किसानों तक सही संदेश अधिक प्रभावी ढंग से पहुंचाने में मदद मिलेगी।

कपास उत्पादन तकनीक के बारे में विस्तृत जानकारी, जैसे कि मिट्टी, किस्मों, उर्वरक आवेदन, बुवाई के तरीकों, सिंचाई प्रणालियों, खरपतवारों के प्रबंधन, कीटों और बीमारियों आदि को भाकृअनुप- केकअनुसं, नागपुर द्वारा विकसित एक एंड्रॉइड आधारित **सीआईसीआर कॉटन ऐप** द्वारा ली जा सकती है। ऐप को गूगल प्ले स्टोर से बिना किसी शुल्क के डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल वृद्धि चरण विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह को भाकृअनुप- केकअनुसं की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाता है ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श दिया जा सके।

<5	5-20	21-50	51-80	>80

वर्षा (मिमी) पौराणिक रंग
0.0 मिमी वर्षा (कोई वर्षा नहीं)
रिक्त स्थान बताता है कि आंकड़े उपलब्ध नहीं है।
स्रोत: www.imdagrimet.gov.in
www.agromet.imd.gov.in